एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्वाधान में हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत दिनांक 27.09.2024 को **''प्रकृति, पर्यावरण एवं वन''** विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गा। संगोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम, कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा मंचासीन गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि वैज्ञानिक अनुसंधान को जन–सामान्य तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी सचिव डॉ. सन्तोष शुक्ला ने उद्बोधन में अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया। विशिष्ट अतिथि अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिंदी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा अपने उद्बोधन में कहा कि विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द को आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। उन्होने कहा कि यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो कि विद्यार्थियों के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कोर्स में सम्मिलित किया जा सकता है। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. धनंजय चोपड़ा, मीडिया एवं सम्पर्क विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा **बदलती दुनिया, बदलती प्रकृति और जन–जागरूकता** विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा की गतिशीलता को रोकने का प्रयास नही करना चाहिए। प्रथम तकनीकी सत्र में आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. उमेश कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा **कृषि और मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव** विषय पर तथा डॉ. शैलेन्द्र राय, प्रोफेसर, के. बनर्जी, वायुमण्डलीय महासागर अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के द्वारा **भारतीय ग्रीष्म कालीन मानसून भविष्यवाणी की चुनौतियां और सम्भावनाएं** विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में डॉ. मृदुला त्रिपाठी, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय तथा डॉ. पूनम शुक्ला, सहा. प्रोफेसर, हेमवती नन्दन बहुगुणा महाविद्यालय के साथ केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। द्वितीय तकनीकी सत्र में आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. अश्वनी कुमार, एसो. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा डॉ. सत्येन्द्र नाथ, एसो. प्रोफेसर, वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। तकनीकी व्याख्यान में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव एवं डॉ. अनुभा श्रीवास्तव के साथ प्रेम कुमार पटेल, डॉ. आदिनाथ, प्रोफेसर, नेहरू ग्राम भारती समविश्वविद्यालय, डॉ. पंकज श्रीवास्तव, सहा. प्रोफेसर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के अन्तिम सत्र में विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। संगोष्ठी में 250 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन

भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा प्रकाशित यथा–वृक्षारोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु–चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु–सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन–महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियां एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया।

शोधछात्रों द्वारा व्याख्यान प्रस्तुतिकरण

संगोष्ठी के अन्तिम सत्र में उपस्थित शोध छात्रों द्वारा निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया–

- **उज्जी पुष्प लता:** जलवायु परिवर्तन शमन एवं अनुकूलन में वनों का महत्व
- **अनूप कुजूर:** कार्बन प्रच्छादन और कार्बन व्यापार में वनो की भूमिका
- **रूपम दास:** भारत की वन जैव विविधता का संरक्षण
- **महुआ पाल:** उत्तर प्रदेश के सूखा प्रभावित क्षेत्रों में कृषिवानिकी हेतु उपयुक्त वृक्ष प्रजातियां
- **स्वाति प्रिया:** कृषिवानिकी में मृदा संवर्धन और मीलिया डूबिया
- **राहुल निषाद:** तराई क्षेत्र में अगरवुड की सम्भावनाएं
- **दर्शिता रावत:** वानिकी में ए. आई–एक क्रान्तिकारी दृष्टिकोण
- **आशीष कुमार यादव:** महुआ–एक बहुपयोगी वृक्ष
- **सत्यव्रत सिंह:** कुछ अल्प ज्ञात पौधों का जैव–पूर्वेक्षण, संरक्षण और उपयोगिता
- **सांचिली वर्मा:** पीलीभीत के बांसुरी उद्योगों के लिए चयनित बाँस प्रजातियों का प्रारम्भि का प्रारम्भिक अध्ययन

कार्यक्रम की झलकियाँ

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

CELEBRATIONS OF NAS
Hon'ble President Of India
Dr. A.P.J. Abdul Kalam
Inaugurating The Platinum
Jubilee Celebrati Of
The Academy On r
6. 2005 At Allaha
राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी
CFRE-EI
PRAYAGRA

Hon'ble President Of India
Dr. A.P.J. Abdul Kalam
Inaugurating The Platinum
Jubilee Celebrations Of
The Acade October
6. 2005 At ad
CFRE

राष्ट्रीय वैज्ञानिक
(हिन्दी पखवाड़ा - 2024

INDIA

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी
THE NATIONAL ACADEMY OF SCIENCES
राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी
स्थापित
ESTD.
1930
भारत
INDIA

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

PRAYAGRAJ

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी
THE NATIONAL ACADEMY OF SCIENCES
राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी
स्थापित
ESTD.
1930
भारत
INDIA

कृषि और मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन
का प्रभाव

यवीय रिएक्टरों का उपयोग करके फलों
हाइड्रोजन और बायोगैस का उत्पाद
GRAM BHARATI

जलवायु परिवर्तन का संभावित प्रभाव
भारत में गेहूं का उत्पादन
Production , Mtons
80
75
70
65
60
55
50
2020
2030
2040
2050
2060
2070

PLATINUM JUBILEE
CELEBRATIONS OF NASI
Tree planting
Restoration planting
Restoration reference site
Airborne

प्रकृति,
(हिन्दी पखवा
27

PLATINUM JUBILEE
Late Prof. Meghnad Saha, Founder President
PROF. H.C. KHARE

Late Prof. Meghnad Saha
BY HONOURABLE
IN THE PRESENCE OF HON'BLE
PROF. H.C. KHARE

PLATINUM JUBILEE
राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

Hon'ble President Of India
Dr. A.P.J. Abdul Kalam
Inaugurating The Platinum
Jubilee Celebrations Of

PLATINUM JUBILEE
CELEBRATIONS OF NASI

NASI
राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत (नासी)
THE NATIONAL ACADEMY OF SCIENCES, INDIA (NASI)

Seminar held under Indian Forestry Research and National Science Academy

SANYAM BHARAT CORRESPONDENT

Prayagraj: Prof. Rajendra Singh (Rajju Bhayya) University, Prayagraj Vice Chancellor Dr. Akhilesh Kumar Singh, Registrar Sanjay Kumar, Agriculture Faculty Coordinator, Prof. Under the guidance of Rajkumar Gupta, on behalf of the Faculty of Agriculture, teacher Dr. Anuj Kumar Mishra along with a group of B.S.Agriculture and M.Sc.Agriculture students visited the Indian Council of Forestry Research and Education-Ecological Center Prayagraj (Environment, Forest and Ministry of Climate Change, Government of India) and National Science Academy, India, Prayagraj, under the joint aegis of "National Scientific Seminar" on 27/09/2024, representation in the seminar organized on the subject of Nature, Environment and Forest in the auditorium of National Science Academy, India, Prayagraj. Did ! The chief guest of the program was Prof. Satyakam, Vice Chancellor U.P. Rajshi Tandon Open University, Prayagraj and headed by Center Head Dr. Sanjay Singh Senior Scientist, Coordinator Dr. Anubha Srivastava, Dr. Kumud Dubey, Dr. Anita Tomar, Alok Yadav, Scientist and Ankur Srivastava Research Assistant, (ICFRE-ERC), Prayagraj were present.

विज्ञान की भाषा को सरलीकृत करने से लाभ

PRAYAGRAJ (27 Sept): पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र व राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को प्रकृति, पर्यावरण एवं वन विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया. इसकी शुरुआत राजर्षिटंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य सत्यकाम ने दीप प्रज्वलन से की. उन्होंने कहा, विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा. संस्थान द्वारा हिंदी में अध्ययन सामग्री तैयार करने में सहयोग देने का भी भरोसा दिया. इस दौरान वृक्षारोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु चंदन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया डूबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि के लिए सहजन की खेती के साथ कृषिवानिकी प्रजातियां व प्रबंधन पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का भी विमोचन किया गया.

एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

बीके यादव/बालजी दैनिक

प्रयागराज। भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्वाधान में हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत दिनांक 27.09.2024 को 'प्रकृति, पर्यावरण एवं वन' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम, कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा मंचासीन गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुंचाना आवश्यक है जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी सचिव डॉ. सन्तोष शुक्ला ने उद्बोधन में अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया। विशिष्ट अतिथि अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिंदी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा अपने उद्बोधन में कहा कि विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। उन्होंने कहा कि यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो विद्यार्थियों के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कोर्स में सम्मिलित किया जा सकता है।

केन्द्र द्वारा प्रकाशित यथा-वृक्षारोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया डूबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन-महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. धर्नजय चोपड़ा, मीडिया एवं सम्पर्क विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा बदलती दुनिया, बदलती प्रकृति और जन-जागरूकता विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा की गतिशीलता को रोकने का प्रयास न किया जाए। प्रथम तकनीकी सत्र में आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. उमेश कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा कृषि और मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विषय पर तथा डॉ. शैलेन्द्र राय, प्रोफेसर, के. बनर्जी, वायुमण्डलीय महासागर अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के द्वारा भारतीय ग्रीष्म कालीन मानसून भविष्यवाणी की चुनौतियां और सम्भावनाएं विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में डॉ. मृदुला त्रिपाठी, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, सीएमपी डिग्री कॉलिज तथा डॉ. पूनम शुक्ला, सहा. प्रोफेसर, हेमवती नन्दन बहुगुणा महाविद्यालय के साथी केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दुबे द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। द्वितीय तकनीकी सत्र आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. अश्वनी कुमार, एसो. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा डॉ. सत्येन्द्र नाथ, एसो. प्रोफेसर, वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। तकनीकी व्याख्यान में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव एवं डॉ अनुभा श्रीवास्तव के साथ प्रेम कुमार पटेल, डॉ. आदिनाथ, प्रोफेसर, नेहरू ग्राम भारती समविश्वविद्यालय, डॉ. पंकज श्रीवास्तव, सहा. प्रोफेसर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के अन्तिम सत्र में विद्यार्थियों यथा उज्जी पुष्प लता, अनूप कुजूर, रूपम दास, महुआ पाल, स्वाती प्रिया, राहुल निषाद, दर्शिता रावत, आशीष कुमार यादव, सत्यव्रत सिंह तथा सांचिली वर्मा आदि शोध छात्रों द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रस्तुत सारांश का व्याख्यान दिया गया। संगोष्ठी में 250 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

कार्यालय संवाददाता

प्रयागराज। भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्त्वाधान में हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत 'प्रकृति, पर्यावरण एवं वन' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम, कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा मंचासीन गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी सचिव डॉ. सन्तोष शुक्ला ने उद्बोधन में अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया। विशिष्ट अतिथि अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कोर्स में सम्मिलित किया जा सकता है। केन्द्र द्वारा प्रकाशित यथा-वृक्षारोपण तकनीक,

में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिंदी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा अपने उद्बोधन में कहा कि विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। उन्होने कहा कि यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो विद्यार्थियों कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया डूबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन-महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. धनंजय चोपड़ा, मीडिया एवं सम्पर्क विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा बदलती दुनिया, बदलती प्रकृति और जन-जागरूकता विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा की गतिशीलता को रोकने का प्रयास न किया जाए। प्रथम तकनीकी सत्र में आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. उमेश कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा कृषि और मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विषय पर तथा डॉ. शैलेन्द्र राय, प्रोफेसर, के. बनर्जी, वायुमण्डलीय महासागर अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के द्वारा भारतीय ग्रीष्म कालीन मानसून भविष्यवाणी की चुनौतियां और सम्भावनाएं विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में डॉ. मृदुला त्रिपाठी, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, सीएमपी डिग्री कॉलेज तथा डॉ. पूनम शुक्ला, सहा. प्रोफेसर, हेमवती नन्दन बहुगुणा महाविद्यालय के साथा केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। द्वितीय तकनीकी सत्र आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. अश्वनी कुमार, एसो. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा डॉ. सत्येन्द्र नाथ, एसो. प्रोफेसर, वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। तकनीकी व्याख्यान में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव एवं डॉ अनुभा श्रीवास्तव के साथ प्रेम कुमार पटेल, डॉ. आदिनाथ, प्रोफेसर, नेहरू ग्राम भारती समविश्वविद्यालय, डॉ. पंकज श्रीवास्तव, सहा. प्रोफेसर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के अन्तिम सत्र में विद्यार्थियों यथा उज्जी पुष्प लता, अनूप कुजूर, रूपम दास, महुआ पाल, स्वाती प्रिया, राहुल निषाद, दर्शिता रावत, आशीष कुमार यादव, सत्यव्रत सिंह तथा सांचिली वर्मा आदि शोध छात्रों द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रस्तुत सारांश का व्याख्यान दिया गया। संगोष्ठी में 250 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

कार्यालय संवाददाता

प्रयागराज। भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्त्वाधान में हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत 'प्रकृति, पर्यावरण एवं वन' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम, कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा मंचासीन गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी सचिव डॉ. सन्तोष शुक्ला ने उद्बोधन में अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया। विशिष्ट अतिथि अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कोर्स में सम्मिलित किया जा सकता है। केन्द्र द्वारा प्रकाशित यथा-वृक्षारोपण तकनीक,

में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिंदी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा अपने उद्बोधन में कहा कि विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। उन्होने कहा कि यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो विद्यार्थियों कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया डूबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन-महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. धनंजय चोपड़ा, मीडिया एवं सम्पर्क विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा बदलती दुनिया, बदलती प्रकृति और जन-जागरूकता विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा की गतिशीलता को रोकने का प्रयास न किया जाए। प्रथम तकनीकी सत्र में आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. उमेश कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा कृषि और मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विषय पर तथा डॉ. शैलेन्द्र राय, प्रोफेसर, के. बनर्जी, वायुमण्डलीय महासागर अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के द्वारा भारतीय ग्रीष्म कालीन मानसून भविष्यवाणी की चुनौतियां और सम्भावनाएं विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में डॉ. मृदुला त्रिपाठी, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, सीएमपी डिग्री कॉलेज तथा डॉ. पूनम शुक्ला, सहा. प्रोफेसर, हेमवती नन्दन बहुगुणा महाविद्यालय के साथा केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। द्वितीय तकनीकी सत्र आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. अश्वनी कुमार, एसो. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा डॉ. सत्येन्द्र नाथ, एसो. प्रोफेसर, वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। तकनीकी व्याख्यान में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव एवं डॉ अनुभा श्रीवास्तव के साथ प्रेम कुमार पटेल, डॉ. आदिनाथ, प्रोफेसर, नेहरू ग्राम भारती समविश्वविद्यालय, डॉ. पंकज श्रीवास्तव, सहा. प्रोफेसर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के अन्तिम सत्र में विद्यार्थियों यथा उज्जी पुष्प लता, अनूप कुजूर, रूपम दास, महुआ पाल, स्वाती प्रिया, राहुल निषाद, दर्शिता रावत, आशीष कुमार यादव, सत्यव्रत सिंह तथा सांचिली वर्मा आदि शोध छात्रों द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रस्तुत सारांश का व्याख्यान दिया गया। संगोष्ठी में 250 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का किया आह्वान

प्रयागराज। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की ओर से हिंदी पखवाड़ा मनाया जा रहा है। इसी क्रम में शुक्रवार को प्रकृति, पर्यावरण एवं वन विषय पर राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी हुई। इसका शुभारंभ उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य सत्यकाम ने किया।

डॉ धनंजय चोपड़ा। संवाद

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी में वैज्ञानिक, शिक्षक व विद्यार्थी। संवाद

राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी सचिव डॉ. संतोष शुक्ला ने अकादमी के कार्यों की जानकारी साझा की। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव और राजभाषा के सहायक निदेशक अजय कुमार चौधरी ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया।

इस मौके पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के धनंजय चोपड़ा ने बदलती दुनिया, प्रकृति और जन जागरूकता के विषय पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम में डॉ. उमेश कुमार सिंह, डॉ. शैलेंद्र राय, प्रो. के. बनर्जी, डॉ. मृदुला त्रिपाठी, डॉ. पूनम शुक्ला, डॉ. कुमुद दूबे, प्रवीण शेखर आदि ने भी अपने विचार रखे।

इस संगोष्ठी में लगभग 250 छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। अंत में डॉ. अनीता तोमर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है

विद्रोही सामना संवाददाता

प्रयागराज। भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्त्वाधान में हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत 'प्रकृति, पर्यावरण एवं वन' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम, कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा मंचासीन गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी सचिव डॉ. सन्तोष शुक्ला ने उद्बोधन में अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया।

विशिष्ट अतिथि अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिंदी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा अपने उद्बोधन में कहा कि विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। उन्होने कहा कि यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो विद्यार्थियों के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कोर्स में सम्मिलित किया जा सकता है। केन्द्र द्वारा प्रकाशित यथा-वृक्षारोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया डूबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन-महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया।

एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी सम्पन्न

संगम शपथ संवाददाता

प्रयागराज। भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्त्वाधान में हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत 'प्रकृति, पर्यावरण एवं वन' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम, कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा मंचासीन गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी सचिव डॉ. सन्तोष शुक्ला ने उद्बोधन में अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया। विशिष्ट अतिथि अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिंदी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा अपने उद्बोधन में कहा कि विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। उन्होने कहा कि यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो विद्यार्थियों के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कोर्स में सम्मिलित किया जा सकता है। केन्द्र द्वारा प्रकाशित यथा-वृक्षारोपण

तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया डूबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन-महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. धनंजय चोपड़ा, मीडिया एवं सम्पर्क विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा बदलती दुनिया, बदलती प्रकृति और जन-जागरूकता विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा की गतिशीलता को रोकने का प्रयास न किया जाए। प्रथम तकनीकी सत्र में आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. उमेश कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा कृषि और मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विषय पर तथा डॉ. शैलेन्द्र राय, प्रोफेसर, के. बनर्जी, वायुमण्डलीय महासागर अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के द्वारा भारतीय ग्रीष्म कालीन मानसून भविष्यवाणी की चुनौतियां और सम्भावनाएं विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में डॉ. मृदुला त्रिपाठी, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, सीएमपी डिग्री कॉलेज तथा डॉ. पूनम शुक्ला, सहा. प्रोफेसर, हेमवती नन्दन बहुगुणा महाविद्यालय के साथा केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। द्वितीय तकनीकी सत्र आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. अश्वनी कुमार, एसो. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा डॉ. सत्येन्द्र नाथ, एसो. प्रोफेसर, वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

विज्ञान भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से आत्मसात करने से लाभः आचार्य सत्यकाम

प्रयागराज (हि.स.)। पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दी पखवाड़ा के अन्तर्गत शुक्रवार को 'प्रकृति, पर्यावरण एवं वन' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि उप्र राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य सत्यकाम ने कहा कि विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा।मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिन्दी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा कहा यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो विद्यार्थियों के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कोर्स में सम्मिलित किया जा सकता है। मुख्य वक्ता इलाहाबाद विश्वविद्यालय, मीडिया एवं सम्पर्क विभाग के प्रो.धनंजय चोपड़ा ने बदलती दुनिया, बदलती प्रकृति और जन-जागरूकता पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा की गतिशीलता को रोकने का प्रयास न किया जाए। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने कहा कि वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुंचाना आवश्यक है। जिसके लिए हिन्दी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी सचिव डॉ.सन्तोष शुक्ला ने अकादमी द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। विशिष्ट अतिथि अजय कुमार चैधरी सहायक निदेशक राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया।डॉ.उमेश कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान विभाग इलाहाबाद

विश्वविद्यालय द्वारा कृषि और मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विषय पर तथा डॉ.शैलेन्द्र राय, प्रोफेसर के. बनर्जी, वायुमण्डलीय महासागर अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय ग्रीष्म कालीन मानसून भविष्यवाणी की चुनौतियां और सम्भावनाएं विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में डॉ. मृदुला त्रिपाठी, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, सीएमपी डिग्री कॉलेज तथा डॉ. पूनम शुक्ला, सहा. प्रोफेसर, हेमवती नन्दन बहुगुणा महाविद्यालय के साथ केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे ने विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।इलाहाबाद विश्वविद्यालय, वनस्पति विज्ञान विभाग के एसो. प्रोफेसर डॉ.अश्वनी कुमार तथा शुआट्स वानिकी महाविद्यालय के एसो. प्रोफेसर डॉ. सत्येन्द्र नाथ ने व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव एवं डॉ अनुभा श्रीवास्तव के साथ प्रेम कुमार पटेल, डॉ. आदिनाथ, ने भी विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस अवसर पर केन्द्र द्वारा प्रकाशित वृक्षारोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया डूबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु सहजन की खेती तथा महोगनी के साथ कृषि वानिकी प्रजातियां एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.अनीता तोमर ने किया।

प्रयागराज विकास प्राधिकरण प्रयागराज

आवश्यक सूचना

जनसाधारण को यह सूजित किया जाता है कि निम्नलिखित आवेदक/आवेदकों ने नीचे सारणी के स्तम्भ-3 उल्लिखित सम्पत्ति, जो प्रयागराज
अंतरण/नामान्तरण अपने नाम कराने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया है। निम्न भवनों/भूखण्डों के नाम परिवर्तन की कार्यवा

प्रभात वंदना
प्रयागराज - शनिवार, 28

दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है

प्रभात वंदना संवाददाता

प्रयागराज। भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्त्वाधान में हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत 'प्रकृति, पर्यावरण एवं वन' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम, कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा मंचासीन गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी सचिव डॉ. सन्तोष शुक्ला ने उद्बोधन में अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया।

विशिष्ट अतिथि अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिंदी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा अपने उद्बोधन में कहा कि

विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। उन्होने कहा कि यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो विद्यार्थियों के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कोर्स में सम्मिलित किया जा सकता है। केन्द्र द्वारा प्रकाशित यथा-वृक्षारोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया डूबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन-महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया।

6
प्रयागराज
लखनऊ, शनिवार, 28 सितंबर 2024

विज्ञान की भाषा को आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा: प्रो. सत्यकाम

(एल के अहेरवार)

▶▶ वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुँचाना जरूरी: डॉ. संजय सिंह

▶▶ हिंदी पखवाड़ा के तहत एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी संपन्न

प्रयागराज। भावाअशिप- पारिस्थितिक नर्स्थापन केन्द्र प्रयागराज एवं राष्ट्रीय ज्ञान अकादमी भारत के संयुक्त त्वाधान में हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत क्वार को ''प्रकृति, पर्यावरण एवं न'' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय ज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि चार्य सत्यकाम, कुलपति उत्तर प्रदेश र्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय तथा चासीन गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन के थ किया गया।

राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी को संबोधित रते हुए मुख्य अतिथि राजर्षि टण्डन क्त विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य त्यकाम ने हिंदी माध्यम से आयोजित र्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि ज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक षाओं से शब्द आत्मसात करके रलीकृत करने से ही लाभ होगा। उन्होंने हा कि यदि आपका संस्थान विज्ञान के त्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री यार करने का इच्छुक हो, जो छात्रों के त में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कोर्स में सम्मिलित किया जा सकता है। केन्द्र द्वारा प्रकाशित यथा-वृक्षारोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया डूबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन-महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी

सचिव डॉ. सन्तोष शुक्ला ने उद्बोधन में अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया। विशिष्ट अतिथि अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया।कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता प्रो. धनंजय चोपड़ा, मीडिया एवं सम्पर्क विभाग द्वारा बदलती दुनिया, बदलती प्रकृति और जन-जागरूकता विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा की गतिशीलता को रोकने का प्रयास न किया जाए। प्रथम तकनीकी सत्र में आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. उमेश कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा कृषि और मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विषय पर तथा डॉ. शैलेन्द्र राय, प्रो. के. बनर्जी, वायुमण्डलीय महासागर अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के द्वारा भारतीय ग्रीष्म कालीन मानसून भविष्यवाणी की चुनौतियां और सम्भावनाएं विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में डॉ. मृदुला त्रिपाठी, रसायन विज्ञान विभाग, सीएमपी डिग्री कॉलेज तथा डॉ. पूनम शुक्ला, सहा. प्रो, हेमवती नन्दन बहुगुणा महाविद्यालय के साथ केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। द्वितीय तकनीकी सत्र आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. अश्वनी कुमार एसो. प्रो वनस्पति विज्ञान विभाग तथा डॉ. सत्येन्द्र नाथ, एसो. प्रोफेसर, वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। तकनीकी व्याख्यान में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव एवं डॉ अनुभा श्रीवास्तव के साथ प्रेम कुमार पटेल, डॉ. आदिनाथ, प्रोफेसर, नेहरू ग्राम भारती विवि डॉ. पंकज श्रीवास्तव, सहा. प्रो. इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र की ओर से आयोजित संगोष्ठी में पुस्तिका का विमोचन करते अतिथिगण • सौ. संस्थान

र्टल आन बोर्ड

देश में एनआइसी की ओर से की गई धियाचन पोर्टल व्यवस्था में सभी गों से अधियाचन प्राप्त किए जाएं। ायोग के सचिव मनोज कुमार ने या कि अधियाचन के लिए बेसिक, मिक, उच्च, तकनीकी, व्यावसायिक, संख्यक एवं टीईटी के लिए संबंधित गों के प्रमुखों को पत्र पहले ही भेजा चुका है। संबंधित विभागों ने नोडल कारी नामित कर दिए हैं। आयोग में सचिव शिव जी मालवीय को नोडल कारी बनाया गया है। प्रयास किए जा हैं कि सरकार और शिक्षा सेवा चयन ग की मंशा के अनुरूप भर्तियों को र प्रक्रिया तेजी से शुरू की जा सके।

विज्ञान की भाषा को सरलीकृत करने से मिलेगा लाभ

जासं, प्रयागराज : पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र व राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को प्रकृति, पर्यावरण एवं वन विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। शुरुआत राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य सत्यकाम ने दीप प्रज्वलन से की। उन्होंने कहा, विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। इस दौरान वृक्षारोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु चंदन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया डूबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि के लिए सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियां व प्रबंधन पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का भी विमोचन किया गया। केंद्र प्रमुख डा. संजय सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी सचिव डा. संतोष शुक्ला ने अकादमी द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. अनुभा श्रीवास्तव ने आयोजन की रूप रेखा बताई।

एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

प्रयागराज। भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्त्वाधान में हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत दिनांक 27.09.2024 को 'प्रकृति, पर्यावरण एवं वन' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम, कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा मंचासीन गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी सचिव डॉ. सन्तोष शुक्ला ने उद्बोधन में अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया। विशिष्ट अतिथि अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिंदी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा अपने उद्बोधन में कहा कि विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। उन्होने कहा कि यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो विद्यार्थियों के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कोर्स में सम्मिलित किया जा सकता है। केन्द्र द्वारा प्रकाशित यथा-वृक्षारोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया डूबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन-महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. धनंजय चोपड़ा, मीडिया एवं सम्पर्क विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा बदलती दुनिया, बदलती प्रकृति और जन-जागरूकता विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा की गतिशीलता को रोकने का प्रयास न किया जाए। प्रथम तकनीकी सत्र में आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. उमेश कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा कृषि और मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विषय पर तथा डॉ. शैलेन्द्र राय, प्रोफेसर, के. बनर्जी, वायुमण्डलीय महासागर अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के द्वारा भारतीय ग्रीष्म कालीन मानसून भविष्यवाणी की चुनौतियां और सम्भावनाएं विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में डॉ. मृदुला त्रिपाठी, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, सीएमपी डिग्री कॉलेज तथा डॉ. पूनम शुक्ला, सहा. प्रोफेसर, हेमवती नन्दन बहुगुणा महाविद्यालय के साथ केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। द्वितीय तकनीकी सत्र आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. अश्वनी कुमार, एसो. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा डॉ. सत्येन्द्र नाथ, एसो. प्रोफेसर, वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। तकनीकी व्याख्यान में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव एवं डॉ अनुभा श्रीवास्तव के साथ प्रेम कुमार पटेल, डॉ. आदिनाथ, प्रोफेसर, नेहरू ग्राम भारती समविश्वविद्यालय, डॉ. पंकज श्रीवास्तव, सहा. प्रोफेसर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के अन्तिम सत्र में विद्यार्थियों यथा उज्जी पुष्प लता, अनूप कुजूर, रूपम दास, महुआ पाल, स्वाती प्रिया, राहुल निषाद, दर्शिता रावत, आशीष कुमार यादव, सत्यव्रत सिंह तथा सांचिली वर्मा आदि शोध छात्रों द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रस्तुत सारांश का व्याख्यान दिया गया। संगोष्ठी में 250 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

विज्ञान भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से आत्मसात करने से लाभ : आचार्य सत्यकाम

प्रकृति, पर्यावरण एवं वन विषय पर राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

इलाहाबाद एक्सप्रेस

प्रयागराज(हि.स.)। पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दी पखवाड़ा के अन्तर्गत शुक्रवार को ÷प्रकृति, पर्यावरण एवं वन÷ विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि उप्र राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य सत्यकाम ने कहा कि विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा।

मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिन्दी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा कहा यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो विद्यार्थियों के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कोर्स में सम्मिलित किया जा सकता है।

मुख्य वक्ता इलाहाबाद विश्वविद्यालय, मीडिया एवं सम्पर्क विभाग के प्रो.धनंजय चोपड़ा ने बदलती दुनिया, बदलती प्रकृति और जन-जागरूकता पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा की गतिशीलता को रोकने का प्रयास न किया जाए।

केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने कहा कि वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुंचाना आवश्यक है। जिसके लिए हिन्दी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी सचिव डॉ.सन्तोष शुक्ला ने अकादमी द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। विशिष्ट अतिथि अजय कुमार चौधरी सहायक निदेशक राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया।

डॉ.उमेश कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा कृषि और मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विषय पर तथा डॉ.शैलेन्द्र राय, प्रोफेसर के. बनर्जी, वायुमण्डलीय महासागर अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय ग्रीष्म कालीन मानसून भविष्यवाणी की चुनौतियां और सम्भावनाएं विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में डॉ. मृदुला त्रिपाठी, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, सीएमपी डिग्री कॉलेज तथा डॉ. पूनम शुक्ला, सहा. प्रोफेसर, हेमवती नन्दन बहुगुणा महाविद्यालय के साथ केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे ने विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, वनस्पति विज्ञान विभाग के एसो. प्रोफेसर डॉ.अश्वनी कुमार तथा शुआट्स वानिकी महाविद्यालय के एसो. प्रोफेसर डॉ. सत्येन्द्र नाथ ने व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव एवं डॉ अनुभा श्रीवास्तव के साथ प्रेम कुमार पटेल, डॉ. आदिनाथ, ने भी विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस अवसर पर केन्द्र द्वारा प्रकाशित वृक्षारोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया डूबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु सहजन की खेती तथा महोगनी के साथ कृषि वानिकी प्रजातियां एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.अनीता तोमर ने किया।

एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन संपन्न

प्रयागराज। भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत के संयुक्त तत्त्वाधान में हिंदी पखवाड़ा के अन्तर्गत शुक्रवार को ÷प्रकृति, पर्यावरण एवं वन÷ विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का शुभारम्भ मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम, कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज तथा मंचासीन गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए बताया कि वैज्ञानिक अनुसंधान को जन सामान्य तक पहुँचाना आवश्यक है, जिसके लिए हिंदी उपयुक्त माध्यम है। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी सचिव डॉ. सन्तोष शुक्ला ने उद्बोधन में अकादमी के द्वारा विज्ञान प्रसार के कार्यों का विस्तार से उल्लेख किया। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया गया। विशिष्ट अतिथि अजय कुमार चौधरी, सहायक निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार, गाजियाबाद ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि आचार्य सत्यकाम ने हिंदी माध्यम से आयोजित कार्यक्रम की सराहना की तथा अपने उद्बोधन में कहा कि विज्ञान की भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। उन्होंने कहा कि यदि आपका संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में किसी प्रकार की अध्ययन सामग्री तैयार करने का इच्छुक हो, जो विद्यार्थियों के हित में हो तो इसे विश्वविद्यालय के सर्टिफिकेट कोर्स में सम्मिलित किया जा सकता है। केन्द्र द्वारा प्रकाशित यथा-वृक्षारोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-चन्दन, कृषिवानिकी में उपयोगी मीलिया डूबिया, कृषकों की आर्थिक समृद्धि हेतु-सहजन की खेती तथा समृद्धि का सतत साधन-महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियाँ एवं प्रबन्धन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर द्वारा किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. धनंजय चोपड़ा, मीडिया एवं सम्पर्क विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा बदलती दुनिया, बदलती प्रकृति और जन-जागरूकता विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा की गतिशीलता को रोकने का प्रयास न किया जाए। प्रथम तकनीकी सत्र में आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. उमेश कुमार सिंह, पर्यावरण विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा कृषि और मानव स्वास्थ्य पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विषय पर तथा डॉ. शैलेन्द्र राय, प्रोफेसर, के. बनर्जी, वायुमण्डलीय महासागर अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के द्वारा भारतीय ग्रीष्म कालीन मानसून भविष्यवाणी की चुनौतियां और सम्भावनाएं विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। तकनीकी व्याख्यान में डॉ. मृदुला त्रिपाठी, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, सीएमपी डिग्री कॉलेज तथा डॉ. पूनम शुक्ला, सहा. प्रोफेसर, हेमवती नन्दन बहुगुणा महाविद्यालय के साथा केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कुमुद दूबे द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। द्वितीय तकनीकी सत्र आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. अश्वनी कुमार, एसो. प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा डॉ. सत्येन्द्र नाथ, एसो. प्रोफेसर, वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। तकनीकी व्याख्यान में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव एवं डॉ अनुभा श्रीवास्तव के साथ प्रेम कुमार पटेल, डॉ. आदिनाथ, प्रोफेसर, नेहरू ग्राम भारती समविश्वविद्यालय, डॉ. पंकज श्रीवास्तव, सहा. प्रोफेसर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के अन्तिम सत्र में विद्यार्थियों यथा उज्जी पुष्प लता, अनुप कुजूर, रूपम दास, महुआ पाल, स्वाती प्रिया, राहुल निषाद, दर्शिता रावत, आशीष कुमार यादव, सत्यव्रत सिंह तथा साँचली वर्मा आदि शोध छात्रों द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रस्तुत सारांश का व्याख्यान दिया गया। संगोष्ठी में 250 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते मुख्य अतिथि

आप तैयार करें अध्ययन सामग्री शुरू करेंगे कोर्स : प्रो. सत्यकाम

प्रयागराज, वरिष्ठ संवाददाता। विज्ञान के क्षेत्र में वन अनुसंधान केंद्र का हिंदी भाषा में प्रयोग बहुत ही सराहनीय है। अगर यह संस्थान विज्ञान के क्षेत्र में कोई अध्ययन सामग्री तैयार करे तो राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय इस पर छात्र हित में कोर्स भी चला सकता है। यह बातें राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत्यकाम ने कहीं। कुलपति शुक्रवार को वन अनुसंधान केंद्र, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी की ओर से हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम के अवसर पर आयोजित 'प्रकृति, पर्यावरण और वन' विषय पर गोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि भाषा को विभिन्न लोक भाषाओं से शब्द आत्मसात करके सरलीकृत करने से ही लाभ होगा। इस दौरान केंद्र की ओर से पौधरोपण तकनीक, कृषकों की आर्थिक समृद्धि के लिए चंदन, कृषिवानिकी में उपयोगी

वन अनुसंधान केंद्र में शुक्रवार को गोष्ठी का शुभारंभ करते अतिथि। • हिन्दुस्तान

मीलिया डूबिया, सहजन की खेती व महोगनी के साथ कृषिवानिकी प्रजातियां व प्रबंधन विषय पर आधारित अनुसंधान पुस्तिका का विमोचन किया गया। केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिशासी सचिव डॉ. सन्तोष शुक्ला ने अकादमी के विज्ञान प्रसार के कार्यों का उल्लेख किया। आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने कार्यक्रम की जानकारी दी। मुख्य वक्ता प्रो. धनंजय चोपड़ा ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रथम तकनीकी में डॉ. उमेश कुमार सिंह, डॉ. शैलेंद्र राय, प्रो. के. बनर्जी, डॉ. मृदुला त्रिपाठी, डॉ. पूनम शुक्ला, डॉ. कुमुद दूबे आदि ने विचार रखे। केंद्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर ने धन्यवाद दिया।